

wo: उपाद्रवयेन वै वनम् MBh. 3, 15772. 15748. 14, 2510. R. 2, 75, 8. येन स द्रिष्टुपुरुषस्तेनोपसंक्रामेत् SADDH. P. 4, 17, a. येनागिस्तेन गतः P. 2, 1, 14, Sch. जग्मतुर्येन तां गङ्गाम् so v. a. येन सा गङ्गा R. 2, 52, 10. — 3) auf welche Weise: येन — तेन Pār. Gṛh. 2, 2. M. 4, 178. wie in Bezug auf, mit acc.: येनेशं हरिरीशस्तं तेन Vop. 5, 7. — 4) woher, warum, weswegen, wodurch, in Folge wessen: प्रणु मे मधवन्येन न दृश्यते मकीर्तितः MBh. 3, 2123. प्रणुत येन ज्ञानामि मैथिलीम् R. 4, 59, 3. किं तत्र येनासि ममानुकम्प्या Ragh. 14, 74. Kathās. 16, 64. 18, 179. 236. — 5) dass, quod: किं ज्ञातमधुना येन ययं ययं वयं वयम् Spr. 2498. न त्वया तत्कृतं कर्म येनाहं विजितः पुरा MBh. 3, 3051. — 6) weil, da H. 1537, Sch. वारं त्य-दिन्द्रावरुणा यशो वा येन स्मा सिनं भर्यः सखिभ्यः RV. 3, 62, 1. R. 4, 19, 18. Spr. 1148. 1212. 1258. 1392. 1516. 2978. 4266. 4455. Çāk. 23, 1. 14. Çrut. 1. Kathās. 18, 204. 36, 121. Prab. 72, 9. Mār. P. 18, 25. LA. (III) 29, 3. 57, 14. — 7) auf dass, damit: तस्मिन्वती स्वहस्तेन तुभ्यं गुणवते गृहम्। ददामि सर्वं येन स्या न पुनर्दुःखभागिनी ॥ Kathās. 18, 271. 52, 312. तदेनं मायावचनैर्विद्यास्याहं क्लृप्ततां ब्रजामि येन विश्वस्तो भवति Pāṇāt. 33, 7. शीघ्रमानीयतां नुरभाणं येन पौरकर्मकराय गच्छामि 40, 15. 84, 17. 206, 8. — 8) ut, dass (einem so, talis entsprechend): स त्वमातिष्ठ योगं तं येन शीघ्रा क्वा मम। भवेयुः so v. a. gieb dir Mühe, dass MBh. 3, 2639. उपायो ऽथ मया दृष्टो निरपायो नरेश्वर। येन देशो न भविता तव 2178. त-द्या यतिष्ये येन mit potent. Mār. P. 43, 67. ततथा कुरु येन mit potent. Kathās. 3, 18. 12, 100. 17, 54. mit praes. 32, 124. 61, 267. मम चैताव-होभविरेका येन स्वहस्तेनमपि सुवर्णाकङ्कां यस्मै कस्मैचिदातुमिच्छामि Hit. 11, 5.

येन n. = जेन H. 424, Sch.

येज्जामहे m. so heisst der Spruch ये यज्जामहे, auf welchen die Jāḥjā folgt, VS. 19, 24. Çāk. Bn. 3, 5. Çr. 4, 1, 39. fg. 2, 2. 19. 20. 3, 16, 15. MBh. 3, 12488.

यैवाय m. N. eines schädlichen kleinen Thieres, Insects oder dergl. AV. 5, 23, 7. 8. Dafür यवाय in der Stelle: तो वृषश्च यवायश्चभवातां तस्मातो वर्षेषु प्रुष्यतो ऽद्विर्हि रूति Kāṭh. 30, 1. यवाय steht auch im gaṇa 1. कुमुदादि und im gaṇa प्रेतादि zu P. 4, 2, 80.

येष्, येषति wallen, sprudeln: उखा येषती RV. 3, 53, 22. चरु AV. 4, 7, 4. येष्, येषते v. l. für पेष् (प्रयत्ने) Dhātup. 16, 14. — Vgl. यस्.

— निम्स herausquellen, ausschwitzen: अथो खलु य एव लोहितो यो वाज्रश्रनान्निर्पेषति तस्य नाशयम् TS. 2, 5, 4. — Vgl. निर्पास.

येष्टिक् adj. als Beiwort von मुहूर्त Kaush. Up. 1, 3, 4.

यैष्ठ (von 1. या mit dem suff. des superl.) adj. am meisten —, am schnellsten gehend oder fahrend RV. 5, 41, 3. 74, 8. याम् येष्ठाः 7, 56, 6.

योक् indecl. neben ज्योक् gaṇa स्वरादि zu P. 4, 1, 37. = ज्योक् Pār. Gṛh. 2, 1 (ज्योक् st. dessen in Z. d. d. m. G. 7, 533, 2).

योक्तर (von 1. युज्) nom. ag. Anschirrer, Anspanner, Wagenlenker MBh. 8, 4901. der anschirrt oder in Thätigkeit setzt VS. 30, 14.

योक्तव्य (wie eben) adj. 1) in's Werk zu setzen, anzuwenden, woran man zu gehen hat: स्तोम TS. 3, 1, 40, 2. तेषु दण्डः MBh. 3, 2883. योग Bhāg. 6, 23. — 2) anzustellen (an ein Geschäft): कर्मणि MBh. 1, 6509.

— 3) zu versehen —, auszustatten mit, theilhaftig zu machen; mit instr. der Ergänzung: इष्टकायैः पुरी Hariv. 3263. ईप्सितेनाभिलाषेण MBh. 3,

3758. — 4) zu sammeln, auf einen Punkt zu richten: योक्तव्यो ऽऽत्मा कथं शक्त्या वेद्यं वै काङ्क्षता परम् MBh. 12, 8915.

यौक्त (wie eben) n. P. 3, 2, 182. Vop. 26, 68. Strick, Seil, Gurt AK. 2, 9, 13. H. 893. Halā. 2, 420. RV. 3, 33, 13. 5, 33, 2. समाने योक्ते सृक् वै युनक्ति AV. 3, 30, 6. 7, 78, 1. TS. 1, 6, 4, 3. TBh. 3, 3, 3. Çat. Bn. 1, 3, 1, 13. मौञ्ज 6, 4, 2, 7. Kāṭh. Çr. 2, 7, 1. 3, 8, 2. 7, 4, 6. 8, 1, 7. 16, 3, 6. Kauç. 33. 76. M. 8, 292. काञ्चनरश्मियोक्ताः (क्याः) MBh. 4, 1663. 5, 3014. 6, 2293. 3968. 7, 4389. Hariv. 9285. 9319. R. 1, 43, 19. 20. das Band am Besen (वेद) Āçv. Çr. 1, 11, 3. 8. Çāk. Çr. 1, 13, 11. मुञ्ज° die umschlingenden Arme als Schlinge gedacht (vgl. बाहुपाश u. पाश) MBh. 7, 5922. दैश° mit zehn Gurten versehen (von den Fingern umspannt) RV. 10, 49, 7 und nach dieser Stelle Naigh. 2, 5 योक्त als Bez. der Finger.

योक्तक n. = योक्त Varāh. Bṛh. 27, 28.

योक्ताय् (von योक्ता), °यति umbinden, umschlingen: (तम्) योक्तायामास बाहुभ्यां यम् रथनया यथा MBh. 3, 416. 4, 771 (nach der Lesart der ed. Bomb.). 1, 6038.

यौग (von 1. युज्) 1) m., ausnahmsweise n. MBh. 13, 1132. am Ende eines adj. comp. f. या MBh. 17, 49. P. 2, 2, 8, Vārt. 1. Çāk. 42. a) das Anschirren: वाजिनो रासभस्य RV. 1, 34, 9. एकस्मिन्योगे भुरणा समाने परिं वा मस स्रवतो रथौ गात् in einer und derselben Fahrt 7, 67, 8. यो-गो योग इति क्रुद्धाः सारथीभ्योचोदयन् angespannt! angespannt! MBh. 5, 5958. — b) Gespann: न तत्र रथा न रथयोगा न पन्थानो भवन्ति Çat. Bn. 14, 7, 4, 11. रथयोगविद् MBh. 3, 12086. सीर° Kauç. 27. षड्योगैः षड्योगैः (AV. Prāt. 3, 2) Sechs-, Achtgespann AV. 6, 91, 1. सीरं षड्योगम् Kāṭh. Çr. 5, 11, 12. Vgl. द्योग. — c) das Rüsten (eines Heeres): एते हि योगाः सेनायाः प्रशस्ताः परबाधने MBh. 12, 3693. सेना° 3691. 2, 2466. वलानाम् R. 2, 82, 29 (89, 11 Gorr.). योगमाज्ञापयामासुर्युद्धाय च विनियुः MBh. 8, 10. योग = संनहन, संनाह AK. 3, 4, 23. Trik. 3, 3, 66. fg. Med. g. 18. fg. — d) das Auflegen (eines Pfeils): योगमस्त्राणि गच्छन्ति (so die ed. Bomb.) MBh. 6, 5202. अस्त्र° 4, 47. — e) das Anstellen, Ins Werksetzen, Ausfüh- ren, Anwendung, Gebrauch: ऋतस्य RV. 3, 27, 11. 10, 30, 11. पाच्योाम् 33, 9. हृन्दसाम् 10, 114, 9. वाचः TS. 2, 5, 2, 1. यो वै युजं योगं घ्रागते युनक्ति 1, 8, 4 (vgl. AV. 19, 13, 1). एतैरुपाययोगैः M. 9, 10. कर्मणाम् (Gegens. संन्यास) Bhāg. 5, 1. बुद्धि° 2, 49. वञ्चना° MBh. 4, 1560. 1563. माया° R. 1, 31, 8. Bhāg. P. 2, 9, 26. अष्टश्च स्वरयोगो मे R. 2, 69, 20. विश्वास° 5, 90, 10. क्रिया° (s. auch bes.) Bhāg. P. 1, 5, 34. 3, 21, 7. स्नेहदातिपथयोः Vikr. 23. Ragh. 10, 87. Kir. 5, 52. Rāga-Tar. 2, 171. मरुत्तमानामभिधानयोगः Bhāg. P. 1, 18, 18. समाधि° 3, 5, 46. 8, 21. वितान° 2, 1, 37. भोग° Rāga-Tar. 1, 65. 278. 3, 298. 4, 371. Pāṇāt. 3, 1, 6. Anwendung eines Medicaments, Mittel, Kur Suçr. 1, 147, 12. 161, 14. 183, 19. 2, 33, 6. 49, 17. 69, 4. वाजीकर 133, 16. 338, 19. Çāk. Saṃh. 3, 2, 17. योग = प्रयोग Med. = शौषध Trik. = भेषज Med. — f) Mittel überh., schlaues Mittel, Kniff: तस्या योगमवि-न्दतः MBh. 1, 5152. नहि योगं प्रपश्यामि येन मुच्येयमापदः 6127. प्रच्छन्ना वा प्रकाशो वा योगो यो ऽरिं प्रबाधते 2, 1953. योगेन unter Anwendung eines Mittels, auf eine schlaue Weise 3, 10777. 7, 677. सुज्ञा योगेन मृ-ह्भवन्ति न तु नीचाः Spr. 49. बहुभिर्योगैः MBh. 13, 2655. Hariv. 4147. 4151. R. 2, 73, 15. R. Gorr. 1, 52, 16. 2, 78, 18. Ragh. 9, 23. Bhāg. P. 3, 14, 45. दृष्ट्वा संज्ञपनं योगं यन्मनां स पतिर्मखे 4, 5, 24. श्रेयःप्रसिद्धये 18, 3, 7,